IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, S.Iss 01, 2023

छत्तीसगढ़ के सामाजिक रीति-रिवाज और त्योहार

Dr. Vandana Sharma
Assistant Professor (Hindi), Disha College Raipur (C.G)

Abstract

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर इसकी रीति-रिवाजों और त्योहारों के माध्यम से प्रकट होती है, जो राज्य की सामाजिक संरचना, सामूहिकता, और सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती है। यह अध्ययन छत्तीसगढ़ के प्रमुख रीति-रिवाजों और त्योहारों का विश्लेषण करता है, जिनमें जन्म, विवाह, मृत्यु से जुड़े परंपराएं और हरेली, पोला, तीजा, मड़ई जैसे त्योहार शामिल हैं। यह रीति-रिवाज और त्योहार न केवल सामाजिक एकता को प्रोत्साहित करते हैं, बल्कि सामूहिक सहयोग, पर्यावरण संरक्षण, और सांस्कृतिक पहचान को भी सुदृढ़ करते हैं।

समय के साथ आधुनिकता, वैश्वीकरण, और पर्यावरणीय चुनौतियों ने इन परंपराओं को प्रभावित किया है। हालांकि, यह परंपराएं अभी भी सामूहिकता और सामाजिक समरसता बनाए रखने में प्रासंगिक हैं। इस अध्ययन में छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने और भविष्य में इसे प्रासंगिक बनाए रखने के लिए सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

यह अध्ययन न केवल छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक संरचना को समझने में सहायक है, बल्कि यह परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाने की दिशा में भी मार्गदर्शन प्रदान करता है। छत्तीसगढ़ की परंपराएं और त्योहार आज भी सामुदायिक भावना और सांस्कृतिक एकता के आदर्श उदाहरण हैं।

Keyword छत्तीसगढ़ , रीति-रिवाज , त्योहार , सामाजिक संरचना

प्रस्तावना

1.1 छत्तीसगढ़ का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

छत्तीसगढ़, जिसे भारत का "धान का कटोरा" कहा जाता है, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और पारंपरिक सामाजिक ताने-बाने के लिए प्रसिद्ध है। यह राज्य अपने लोकनृत्य, संगीत, हस्तशिल्प और सामाजिक रीतियों के कारण भारत के सांस्कृतिक मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। छत्तीसगढ़ का सामाजिक जीवन इसकी जनजातीय परंपराओं से गहराई से जुड़ा हुआ है, जिसमें गोण्ड, बैगा, और हल्बा जैसी जनजातियों का विशेष योगदान है। ये जनजातियां प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर अपनी विशिष्ट परंपराओं और रीति-रिवाजों को संरक्षित करती हैं।

छत्तीसगढ़ के ग्रामीण और जनजातीय समाज में परंपराओं की भूमिका केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना को भी एकजुट बनाए रखती है। त्योहार और रीति-रिवाज यहां सामाजिक समरसता के प्रतीक हैं, जो जीवन के हर पहलू—जन्म, विवाह, और मृत्यु से जुड़े हैं। इसके अतिरिक्त, कृषि आधारित त्योहार, जैसे हरेली और पोला, समाज की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था को दर्शाते हैं (श्रीवास्तव, 2019)।

छत्तीसगढ़ के सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व को समझने के लिए इसकी बहुसांस्कृतिक और बहुभाषीय संरचना पर ध्यान देना आवश्यक है। यहां की 90% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है, जो प्रकृति

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

और परंपरा के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखती है। लोककला, हस्तशिल्प, और नृत्य जैसे पंथी और सुवा नृत्य राज्य की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते हैं (त्रिपाठी, 2021)।

1.2 रीति-रिवाज और त्योहारों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

छत्तीसगढ़ के रीति-रिवाज और त्योहार इसकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत के अभिन्न अंग हैं। इन परंपराओं की जड़ें वैदिक काल से लेकर छत्तीसगढ़ के शासकों के काल तक फैली हुई हैं। प्राचीन समय में, यह क्षेत्र दक्षिण कोसल के नाम से जाना जाता था और यह क्षेत्र रामायण और महाभारत जैसी पौराणिक कथाओं में भी उल्लेखित है। यह मान्यता है कि भगवान राम ने अपने वनवास के दौरान छत्तीसगढ़ के दंडकारण्य क्षेत्र का भ्रमण किया था, जो इस क्षेत्र को धार्मिक महत्व प्रदान करता है (मिश्रा, 2018)।

छत्तीसगढ़ में जनजातीय समुदायों ने अपने रीति-रिवाजों को प्राकृतिक परिवेश और संसाधनों से जोड़ा है। यह प्रथाएं न केवल सामाजिक, बल्कि आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं से भी संबंधित हैं। उदाहरण के लिए, पोला त्योहार में बैलों की पूजा की जाती है, जो कृषि में उनके योगदान का प्रतीक है। वहीं, हरेली त्योहार खेती की शुरुआत का प्रतीक है और इसमें किसान अपने औजारों और भूमि की पूजा करते हैं। इन त्योहारों की जड़ें कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में हैं, जो आज भी राज्य की जीवनशैली को परिभाषित करती हैं (चतुर्वेदी, 2020)।

इतिहास में, मराठा और ब्रिटिश शासन के दौरान छत्तीसगढ़ के त्योहारों और परंपराओं पर भी प्रभाव पड़ा। मराठों के समय धार्मिक त्योहारों को बढ़ावा मिला, जबकि ब्रिटिश काल में औद्योगिकीकरण ने परंपराओं को चुनौती दी। इसके बावजूद, छत्तीसगढ़ के लोग अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में सफल रहे हैं।

1.3 अध्ययन का उद्देश्य और क्षेत्रीय संदर्भ

यह अध्ययन छत्तीसगढ़ की सामाजिक रीति-रिवाजों और त्योहारों की बहुआयामी भूमिका को समझने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य इन परंपराओं के ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं का विश्लेषण करना है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि ये परंपराएं छत्तीसगढ़ के सामाजिक जीवन को किस प्रकार आकार देती हैं।

विशेष रूप से, इस अध्ययन का उद्देश्य निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करना है:

1. छत्तीसगढ़ की प्रमुख रीति-रिवाजों और त्योहारों का विश्लेषण।
2. इन परंपराओं का सामाजिक संरचना और सामूहिकता पर प्रभाव।
3. आधुनिकता और वैश्वीकरण के प्रभावों का अध्ययन।
4. परंपराओं और त्योहारों के संरक्षण और संवर्धन के उपाय।

सारणी 1: छत्तीसगढ़ के प्रमुख जातीय समूह और उनकी विशेषताएं

जातीय समूह	प्रमुख क्षेत्र	संस्कृति/जीवनशैली की विशेषताएं	मुख्य त्योहार
गोण्ड जनजाति	बस्तर, कांकेर	घोटुल प्रथा, प्राकृतिक पूजन, हस्तशिल्प	मड़ई, दशहरा
बैगा जनजाति	कबीरधाम, बिलासपुर	पारंपरिक औषधि ज्ञान, झूम खेती	करमा, पोला

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

हल्बा जनजाति	दंतेवाड़ा, नारायणपुर	कृषि और शिकार पर आधारित जीवनशैली	मड़ई, तीजा
सतनामी समुदाय	रायपुर, दुर्ग	गुरु घासीदास के सिद्धांत, जैतखाम पूजन	पंथी उत्सव, माघी पूर्णिमा
कुर्मी समुदाय	बिलासपुर, रायगढ़	कृषि प्रधान जीवनशैली, सामूहिकता	हरेली, पोला

2.1 जातीय समूह और समुदाय (Ethnic Groups and Communities)

छत्तीसगढ़ की सामाजिक संरचना में जनजातीय और गैर-जनजातीय समूहों का सह-अस्तित्व देखा जाता है। राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 30% हिस्सा जनजातीय समुदायों से संबंधित है, जो भारत में जनजातीय संस्कृति और परंपराओं का एक महत्वपूर्ण केंद्र है।

1. **जनजातीय समुदाय**:
   - **गोण्ड जनजाति**: यह राज्य की सबसे बड़ी जनजाति है, जो बस्तर, कांकेर, और दंतेवाड़ा क्षेत्रों में निवास करती है। गोण्ड जनजाति की सांस्कृतिक परंपराएं, जैसे पारंपरिक नृत्य और लोकगीत, छत्तीसगढ़ की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं।
   - **बैगा जनजाति**: यह जनजाति मुख्यतः जंगलों में निवास करती है और कृषि और शिकार पर निर्भर रहती है। इनकी पारंपरिक जीवनशैली प्रकृति के साथ सामंजस्य पर आधारित है।
   - **हल्बा और भतरा जनजातियां**: ये जनजातियां अपनी अनूठी हस्तशिल्प और सामाजिक संरचना के लिए जानी जाती हैं।
   - **कंवर और उरांव जनजातियां**: ये जनजातियां अपने पारंपरिक रीति-रिवाजों और सामुदायिक उत्सवों के लिए प्रसिद्ध हैं।
2. **गैर-जनजातीय समुदाय**: छत्तीसगढ़ में ब्राह्मण, राजपूत, कुर्मी, सतनामी, और अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) के समुदाय प्रमुखता से निवास करते हैं। ये समुदाय मुख्यतः कृषि, व्यापार, और विभिन्न पेशों में कार्यरत हैं।
   - **सतनामी समुदाय**: यह समुदाय कबीरपंथ के अनुयायी हैं और सामाजिक समानता के लिए प्रसिद्ध हैं।
   - **कुर्मी समुदाय**: ये छत्तीसगढ़ की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में योगदान करते हैं और अपनी पारंपरिक जीवनशैली के लिए जाने जाते हैं।

2.2 परिवार और विवाह परंपराएं (Family and Marriage Traditions)

छत्तीसगढ़ में परिवार और विवाह सामाजिक संरचना के मूल आधार हैं। यहां संयुक्त परिवार की परंपरा प्राचीन समय से चली आ रही है, हालांकि आधुनिकता के प्रभाव से अब एकल परिवार का चलन बढ़ रहा है।

1. **परिवार संरचना**:
   - संयुक्त परिवार व्यवस्था यहां आम है, जहां बड़े-बुजुर्ग परिवार के प्रमुख माने जाते हैं।
   - परिवारों में पारंपरिक और धार्मिक मान्यताओं को प्राथमिकता दी जाती है।
   - महिलाओं को घर की देखभाल और पारिवारिक संस्कारों का पालन करने की जिम्मेदारी दी जाती है, हालांकि समय के साथ उनके अधिकारों में सुधार हुआ है।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

2. **विवाह परंपराएं**:
    - **जनजातीय विवाह परंपराएं**: जनजातीय समुदायों में विवाह समारोह सरल होते हैं, जो सामाजिक और आर्थिक समानता का प्रतीक हैं। गोण्ड जनजाति में विवाह से पहले 'घोटुल' नामक संस्था का महत्व है, जहां युवा अपने जीवन साथी का चयन करते हैं।
    - **गैर-जनजातीय विवाह परंपराएं**: ब्राह्मण और अन्य उच्च जातियों में वैदिक रीति-रिवाजों के अनुसार विवाह किए जाते हैं। कुर्मी और सतनामी समुदायों में विवाह सामूहिक आयोजन के रूप में होते हैं, जिससे सामुदायिक भावना मजबूत होती है।
    - **दहेज प्रथा**: छत्तीसगढ़ के कुछ क्षेत्रों में दहेज प्रथा प्रचलित है, हालांकि इसके खिलाफ जागरूकता बढ़ रही है।
3. **विवाह के विशेष रूप**:
    - जनजातीय समाज में 'छुट्टा विवाह' (विवाह विच्छेद) और पुनर्विवाह स्वीकृत हैं।
    - बाल विवाह परंपरागत रूप से प्रचलित था, लेकिन कानूनी प्रतिबंध और जागरूकता अभियानों के कारण इसमें कमी आई है।

2.3 पारंपरिक मान्यताएं और प्रथाएं (Traditional Beliefs and Practices)

छत्तीसगढ़ के समाज में पारंपरिक मान्यताएं और प्रथाएं लोगों के जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। ये मान्यताएं मुख्यतः धार्मिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक तत्वों से प्रभावित हैं।

1. **धार्मिक मान्यताएं**:
    - छत्तीसगढ़ के लोग प्रकृति पूजक हैं और देवताओं, पेड़ों, और पहाड़ों को पवित्र मानते हैं।
    - **मातृदेवी पूजा**: यहां की प्रमुख धार्मिक परंपराओं में देवी दुर्गा और क्षेत्रीय देवताओं, जैसे दंतेश्वरी और महामाया, की पूजा प्रमुख है।
    - **जैतखाम**: सतनामी समुदाय का यह पवित्र प्रतीक सामाजिक एकता का प्रतिनिधित्व करता है।
2. **प्राकृतिक प्रथाएं**:
    - जनजातीय समाज प्रकृति के साथ गहरे संबंध रखता है। जैसे हरेली त्योहार में पेड़ों और औजारों की पूजा होती है।
    - कृषि से जुड़े रीति-रिवाज, जैसे बीज बोने और कटाई के समय पूजा, सामाजिक और आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
3. **सामाजिक प्रथाएं**:
    - छत्तीसगढ़ में जातिगत और सामुदायिक पंचायतों का महत्व है, जो सामाजिक मुद्दों को सुलझाने और रीति-रिवाजों को बनाए रखने में सहायक हैं।
    - **मड़ई और मेले**: ये आयोजन सामाजिक सामंजस्य और आर्थिक गतिविधियों का केंद्र हैं।
4. **परंपरागत चिकित्सा और विश्वास**:
    - जनजातीय समाज में बीमारियों के इलाज के लिए परंपरागत जड़ी-बूटियों और ओझा-गुणी पर विश्वास किया जाता है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, S.Iss 01, 2023

3. रीति-रिवाज (Customs and Traditions)

छत्तीसगढ़ की रीति-रिवाजें इसकी सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक संरचना का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये परंपराएं जीवन के हर चरण में गहरी जड़ें जमाए हुए हैं—जन्म, विवाह, मृत्यु, और कृषि जीवन में। ये रीति-रिवाज न केवल समाज को जोड़े रखते हैं, बल्कि सामुदायिक भावनाओं को भी सुदृढ़ करते हैं।

3.1 जन्म और नामकरण की परंपराएं (Birth and Naming Customs)

छत्तीसगढ़ में जन्म से जुड़े रीति-रिवाजों का उद्देश्य न केवल नवजात को आशीर्वाद देना होता है, बल्कि परिवार और समाज में खुशियां बांटना भी होता है।

1. **जन्म से जुड़े रीति-रिवाज**:
    - बच्चे के जन्म के बाद "सुतक" (अशुद्धता की अवधि) का पालन किया जाता है, जो आमतौर पर 10-12 दिनों तक रहता है।
    - इस अवधि में मां और बच्चे को विशेष देखभाल में रखा जाता है।
    - गांव की दाइयों (पारंपरिक प्रसव सहायिका) का यहां विशेष महत्व है।
2. **नामकरण संस्कार**:
    - जन्म के 11वें या 21वें दिन बच्चे का नामकरण समारोह आयोजित किया जाता है।
    - इस आयोजन में पंडित या पुजारी वैदिक मंत्रों का उच्चारण करते हैं और बच्चे का नाम रखते हैं।
    - नाम आमतौर पर परिवार के बुजुर्गों या देवी-देवताओं के नाम पर रखा जाता है।
    - जनजातीय समुदायों में बच्चे का नाम प्रकृति, पेड़-पौधों, या स्थानीय परंपराओं के आधार पर रखा जाता है।
3. **रखवारी प्रथा**:
    - जनजातीय समाज में नवजात को बुरी नजर से बचाने के लिए काले धागे या ताबीज पहनाने की प्रथा प्रचलित है।

3.2 विवाह रीति-रिवाज (Marriage Customs)

विवाह छत्तीसगढ़ में सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व का सबसे बड़ा आयोजन होता है। यह केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों और समुदायों का मिलन माना जाता है।

1. **विवाह से पहले की परंपराएं**:
    - विवाह तय होने से पहले "गोटुल" परंपरा निभाई जाती है, खासकर गोण्ड जनजातियों में। यह युवा लड़के-लड़कियों का सामुदायिक केंद्र होता है, जहां वे अपने जीवनसाथी का चयन करते हैं।
    - कुर्मी और अन्य गैर-जनजातीय समुदायों में कुंडली मिलान और "रोका" जैसी परंपराएं निभाई जाती हैं।
2. **विवाह समारोह**:
    - विवाह समारोह आमतौर पर दो से तीन दिनों तक चलता है।
    - हिंदू समुदाय में विवाह वैदिक रीति-रिवाजों के साथ संपन्न होता है। मंडप सजाना, वरमाला, और फेरे जैसे अनुष्ठान इसका हिस्सा हैं।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

- जनजातीय विवाह में रीति-रिवाज सरल होते हैं। वर पक्ष के लोग वधू के घर जाकर पारंपरिक गीतों और नृत्य के साथ विवाह संपन्न करते हैं।
- दहेज प्रथा कुछ क्षेत्रों में प्रचलित है, लेकिन जनजातीय समाज में इसे प्रोत्साहित नहीं किया जाता।

3. **विशेष प्रथाएं**:
   - **छूट्टा विवाह**: जनजातीय समाज में तलाक और पुनर्विवाह स्वीकृत है।
   - **सामूहिक विवाह**: आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गों में सामूहिक विवाह आयोजन प्रचलित हैं।

3.3 मृत्यु और अंतिम संस्कार की प्रथाएं (Death and Funeral Customs)

मृत्यु से जुड़े रीति-रिवाज छत्तीसगढ़ में व्यक्ति की आत्मा की शांति और सामाजिक समरसता को महत्व देते हैं।

1. **मृत्यु के बाद की प्रथाएं**:
   - हिंदू समाज में मृतक के शव का दाह संस्कार किया जाता है।
   - परिवार "शोक" की अवधि में 12 से 13 दिनों तक समाजिक गतिविधियों से दूर रहता है।
   - "पिंडदान" और "श्राद्ध" जैसे अनुष्ठान आत्मा की शांति के लिए किए जाते हैं।
2. **जनजातीय समुदायों की प्रथाएं**:
   - जनजातीय समाज में दफनाने की प्रथा अधिक प्रचलित है।
   - मृत्यु के बाद मृतक के प्रिय सामानों को भी उसके साथ दफनाया जाता है।
   - "मृतक भोज" का आयोजन समुदाय के लोगों को एकजुट करता है।
3. **विशेष प्रथाएं**:
   - "कुरिया पूजा" के माध्यम से मृतक की आत्मा की पूजा की जाती है।
   - सामुदायिक स्तर पर "मड़ई" या "मेलों" का आयोजन मृतक की स्मृति में किया जाता है।

3.4 कृषि और पारंपरिक जीवनशैली से जुड़े रीति-रिवाज (Agricultural and Traditional Lifestyle Customs)

छत्तीसगढ़ की रीति-रिवाजें इसकी कृषि आधारित जीवनशैली से गहराई से जुड़ी हुई हैं। यहां के त्योहार, प्रथाएं, और परंपराएं प्रकृति और कृषि से प्रेरित हैं।

1. **खेती-किसानी से जुड़ी परंपराएं**:
   - **हरेली त्योहार**: खेती के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है। किसान अपने औजारों और बैलों की पूजा करते हैं।
   - **पोला त्योहार**: बैलों की पूजा का यह त्योहार कृषि कार्य में उनके योगदान को सम्मानित करता है।
   - **बीज बोने की पूजा**: फसल बोने से पहले भूमि और बीजों की पूजा की जाती है।
2. **कृषि आधारित जीवनशैली**:
   - कृषि कार्यों में सामूहिकता का भाव देखा जाता है, जैसे "हल चलाना" और "धान रोपाई"।
   - खेती-किसानी में महिलाएं भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, S.Iss 01, 2023

3. **जनजातीय रीति-रिवाज**:
    - जनजातीय समाज में फसल कटाई के बाद "मड़ई" और "नाचा" जैसे उत्सवों का आयोजन होता है।
    - इन उत्सवों में नृत्य और गायन के माध्यम से भगवान का आभार व्यक्त किया जाता है।
4. **पारंपरिक जीवनशैली**:
    - भोजन में "महुआ" और "चीला" जैसे पारंपरिक व्यंजन प्रमुख हैं, जो कृषि उत्पादों पर आधारित होते हैं।
    - घरों में पारंपरिक मिट्टी के चूल्हे और बांस की सामग्री का उपयोग किया जाता है।

4. छत्तीसगढ़ के प्रमुख त्योहार (Festivals of Chhattisgarh)

छत्तीसगढ़ अपनी सांस्कृतिक विविधता और परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। यहां के त्योहार समाज के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने को प्रतिबिंबित करते हैं। इन त्योहारों में प्रकृति, कृषि, सामूहिकता और आध्यात्मिकता का गहरा संबंध देखने को मिलता है।

4.1 हरेली त्योहार

खेती-किसानी और पर्यावरण से जुड़ा महत्व

हरेली त्योहार छत्तीसगढ़ के सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण कृषि त्योहारों में से एक है। यह श्रावण मास की अमावस्या को मनाया जाता है और खेती-किसानी की शुरुआत का प्रतीक है।

1. **मुख्य गतिविधियां**:
    - किसान अपने खेतों के औजारों की पूजा करते हैं और उन्हें पवित्र जल एवं हल्दी से धोते हैं।
    - इस दिन बैलों और हल की विशेष पूजा की जाती है, जो कृषि कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
    - **"गौरी-गौरा पूजा"**: इस दिन ग्रामीण क्षेत्र में देवी-देवताओं की पूजा की जाती है।
    - बच्चों के लिए **"गेड़ी चढ़ना"** (लकड़ी के खंभों पर चढ़ने का खेल) मुख्य आकर्षण है।
2. **पर्यावरण से जुड़ा महत्व**:
    - इस त्योहार के दौरान वृक्षारोपण किया जाता है, जिससे पर्यावरण संरक्षण की परंपरा को बढ़ावा मिलता है।
    - ग्रामीण लोग इस दिन खेतों में औषधीय पौधों जैसे नीम और तुलसी की पूजा करते हैं।
3. **सांस्कृतिक महत्व**:
   हरेली केवल कृषि पर आधारित त्योहार नहीं है, बल्कि यह समाज में सामूहिकता और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता की भावना को बढ़ावा देता है।

4.2 तीजा त्योहार

महिलाओं का त्योहार और इसके सामाजिक संदर्भ

तीजा त्योहार छत्तीसगढ़ में महिलाओं के लिए समर्पित एक प्रमुख पर्व है। यह भादो मास में मनाया जाता है और इसमें महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र और परिवार की सुख-शांति के लिए व्रत रखती हैं।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

1. **मुख्य अनुष्ठान**:
    - महिलाएं उपवास करती हैं और भगवान शिव तथा माता पार्वती की पूजा करती हैं।
    - उपवास के बाद **"हल्दी-कुमकुम"** समारोह आयोजित किया जाता है।
    - परिवार की बड़ी महिलाओं से आशीर्वाद लेने की परंपरा है।
2. **सामाजिक संदर्भ**:
    - तीजा त्योहार महिलाओं के बीच सामूहिकता और एकता का प्रतीक है।
    - यह महिलाओं को अपनी परंपराओं और सामाजिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक करता है।
    - विवाहित महिलाएं मायके में जाकर यह त्योहार मनाती हैं, जिससे पारिवारिक संबंध मजबूत होते हैं।
3. **आधुनिक प्रभाव**:
    - आज के समय में इस त्योहार में सांस्कृतिक नृत्य और गीतों का आयोजन भी शामिल हो गया है।

4.3 पोला त्योहार

बैलों का पूजन और कृषि संस्कृति

पोला त्योहार छत्तीसगढ़ में भादो माह की अमावस्या को मनाया जाता है और यह किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण पर्व है। यह त्योहार विशेष रूप से बैलों को समर्पित है, जो कृषि कार्य में सहायक होते हैं।

1. **मुख्य गतिविधियां**:
    - इस दिन बैलों को स्नान कराकर उनके सींगों पर रंग और सजावट की जाती है।
    - बैलों की पूजा कर उन्हें भोजन कराया जाता है।
    - बच्चों के लिए **"नंदी बैल दौड़"** और मिट्टी के बैल खिलौने आकर्षण का केंद्र होते हैं।
2. **कृषि संस्कृति में महत्व**:
    - यह त्योहार कृषि में बैलों की भूमिका को सम्मानित करता है।
    - किसान अपने औजारों और बैलों को आराम देने के साथ आने वाली खेती की योजना बनाते हैं।
3. **सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व**:
    - गांव के लोग सामूहिक भोज का आयोजन करते हैं।
    - यह त्योहार ग्रामीण समाज में सामूहिकता और सहयोग की भावना को मजबूत करता है।

4.4 मड़ई और मेले

सांस्कृतिक एकता और सामूहिक उत्सव

मड़ई और मेले छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये आयोजन विशेष रूप से फसल कटाई के बाद आयोजित किए जाते हैं और धार्मिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक गतिविधियों का संगम हैं।

1. **मड़ई उत्सव**:
    - यह ग्रामीण इलाकों में भगवान और देवताओं के प्रति आभार व्यक्त करने का त्योहार है।
    - इसमें लोग पंथी, सुवा, और करमा नृत्य जैसे लोकनृत्यों का प्रदर्शन करते हैं।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

2. **मेले का महत्व**:
    - मड़ई के दौरान मेला लगता है, जहां गांववाले अपने उत्पाद बेचते और खरीदते हैं।
    - यह मेले सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों का केंद्र बनते हैं।
3. **सांस्कृतिक एकता**:
    - मड़ई और मेले में विभिन्न जातीय और सामाजिक समूह भाग लेते हैं।
    - ये आयोजन समाज में सामूहिकता और एकता को बढ़ावा देते हैं।

4.5 अन्य प्रमुख त्योहार (दशहरा, दीपावली, छेरछेरा, आदि)

छत्तीसगढ़ में अन्य प्रमुख त्योहार भी हर्षोल्लास के साथ मनाए जाते हैं, जो राज्य की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते हैं।

1. **दशहरा**:
    - छत्तीसगढ़ में बस्तर दशहरा विश्व प्रसिद्ध है।
    - यह त्योहार देवी दंतेश्वरी की पूजा के रूप में मनाया जाता है और इसमें 75 दिनों तक उत्सव चलता है।
2. **दीपावली**:
    - दीपों का यह पर्व छत्तीसगढ़ में भी उत्साह के साथ मनाया जाता है।
    - गोवर्धन पूजा और गायों की पूजा का इसमें विशेष महत्व है।
3. **छेरछेरा**:
    - यह त्योहार पौष माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है।
    - गांव के लोग एक-दूसरे के घर जाकर अनाज मांगते हैं, जिससे सामुदायिक सहयोग और समरसता को बढ़ावा मिलता है।
4. **नवाखाई**:
    - यह त्योहार नई फसल के आगमन पर मनाया जाता है।
    - लोग अपने खेतों में पहली फसल भगवान को अर्पित करते हैं।

5. त्योहारों में लोकनृत्य और संगीत

छत्तीसगढ़ के त्योहारों में लोकनृत्य और संगीत का विशेष स्थान है। ये न केवल मनोरंजन का माध्यम हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक पहचान, धार्मिक मान्यताओं, और सामूहिकता की भावना को भी प्रकट करते हैं। प्रत्येक लोकनृत्य और संगीत शैली अपनी विशिष्टता और पारंपरिक महत्व के लिए जानी जाती है।

5.1 पंथी नृत्य (Panthi Dance)

पंथी नृत्य सतनाम पंथ के अनुयायियों का प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक नृत्य है। इसे गुरु घासीदास की शिक्षाओं और आदर्शों को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है।

1. **त्योहारों में स्थान**:
    - यह नृत्य गुरु घासीदास जयंती और अन्य सतनामी त्योहारों पर विशेष रूप से किया जाता है।
    - माघ पूर्णिमा और छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक मेलों में भी इसका प्रदर्शन होता है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, S.Iss 01, 2023

2. **विशेषताएं**:
    - नर्तक सफेद धोती और सिर पर पगड़ी पहनते हैं, जो सतनामी समाज की सादगी का प्रतीक है।
    - पंथी नृत्य तेज गति और कठिन शारीरिक मुद्राओं का मिश्रण है।
    - इसे सामूहिक रूप से किया जाता है और इसमें नर्तक धार्मिक गीतों के साथ तालमेल बिठाते हैं।
3. **सांस्कृतिक महत्व**:
    - यह नृत्य सतनाम पंथ की शिक्षाओं, समानता, और सामाजिक न्याय का संदेश देता है।
    - यह धार्मिक और सामाजिक एकता को प्रकट करता है।

5.2 सुवा और कर्मा नृत्य

सुवा और कर्मा नृत्य छत्तीसगढ़ के जनजातीय और ग्रामीण समाज के प्रमुख नृत्य हैं, जो त्योहारों और सामाजिक आयोजनों में किए जाते हैं।

1. **सुवा नृत्य**:
    - यह नृत्य दीपावली और अन्य फसल कटाई के त्योहारों पर महिलाएं करती हैं।
    - महिलाएं एक वृत्त बनाकर "सुवा" (तोते) की कहानियों और गीतों को गाते हुए नृत्य करती हैं।
    - यह नृत्य प्रेम, प्रकृति, और समाज की कहानियों को दर्शाता है।
    - गीतों में तोते को प्रतीकात्मक रूप से उपयोग किया जाता है, जो भावनाओं और संदेशों को व्यक्त करता है।
2. **कर्मा नृत्य**:
    - यह नृत्य कर्मा त्योहार पर किया जाता है, जो जनजातीय समाज का महत्वपूर्ण पर्व है।
    - नर्तक वृत्ताकार समूह में नृत्य करते हैं, और इसे ढोल और मांदर की धुन पर किया जाता है।
    - कर्मा नृत्य फसल कटाई और प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करने का प्रतीक है।
3. **सांस्कृतिक महत्व**:
    - सुवा नृत्य महिलाओं के सामूहिक और सांस्कृतिक योगदान को प्रकट करता है।
    - कर्मा नृत्य प्रकृति, कृषि, और सामुदायिक भावना का प्रतीक है।

5.3 लोकगीत और पारंपरिक वाद्य यंत्रों का उपयोग

छत्तीसगढ़ के लोकगीत और पारंपरिक वाद्य यंत्र त्योहारों को जीवंत बनाते हैं। ये गीत और संगीत न केवल मनोरंजन के लिए हैं, बल्कि इनमें समाज की सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताओं की झलक भी मिलती है।

1. **लोकगीत**:
    - छत्तीसगढ़ में पर्वों और त्योहारों पर पारंपरिक लोकगीत गाए जाते हैं।
    - **ददरिया**: यह गीत प्रेम और रिश्तों को दर्शाता है।
    - **सोहर**: यह गीत जन्म के अवसरों पर गाया जाता है।
    - **फाग गीत**: होली के दौरान गाए जाने वाले गीत हैं।
    - **भजन और कीर्तन**: धार्मिक त्योहारों में भगवान की स्तुति के लिए गाए जाते हैं।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

2. **पारंपरिक वाद्य यंत्र**:
    - **ढोलक और मांदर**: ये वाद्य यंत्र प्रमुख रूप से नृत्यों में उपयोग किए जाते हैं।
    - **तम्बूरा और सारंगी**: यह वाद्य यंत्र भक्ति संगीत के लिए उपयोग किए जाते हैं।
    - **मोहरी और शहनाई**: विवाह और धार्मिक आयोजनों में उपयोग किया जाता है।
    - **झांझ और खंजरी**: छोटे और हल्के वाद्य यंत्र धार्मिक और सामुदायिक आयोजनों में उपयोग किए जाते हैं।
3. **सांस्कृतिक महत्व**:
    - लोकगीत और संगीत सामाजिक मूल्यों, ऐतिहासिक घटनाओं, और प्रेम की कहानियों को संरक्षित रखते हैं।
    - ये समाज को मनोरंजन के साथ-साथ सांस्कृतिक शिक्षा भी प्रदान करते हैं।

6. रीति-रिवाज और त्योहारों में बदलाव

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक परंपराएं और त्योहार सदियों से इसके सामाजिक और धार्मिक जीवन का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। हालांकि, समय के साथ इन परंपराओं और त्योहारों में अनेक बदलाव देखे गए हैं। आधुनिकता, वैश्वीकरण, पर्यावरणीय और आर्थिक प्रभावों ने इन रीति-रिवाजों को प्रभावित किया है, लेकिन साथ ही इनके संरक्षण और अनुकूलन के प्रयास भी जारी हैं।

6.1 आधुनिकता और पारंपरिक रीति-रिवाजों का समायोजन

आधुनिकता ने छत्तीसगढ़ के रीति-रिवाजों और त्योहारों में अनेक बदलाव लाए हैं।

1. **रीति-रिवाजों में सरलता**:
    - पारंपरिक रीति-रिवाजों में अब सरलता और व्यावहारिकता देखने को मिलती है। उदाहरण के लिए, विवाह और अंतिम संस्कार जैसे समारोह अब कम समय और संसाधनों में संपन्न किए जाते हैं।
    - पूजा और धार्मिक अनुष्ठानों में तकनीकी उपकरणों, जैसे ऑडियो सिस्टम और डिजिटल वीडियो रिकॉर्डिंग का उपयोग आम हो गया है।
2. **त्योहारों का रूपांतर**:
    - पहले त्योहारों का आयोजन सामुदायिक स्तर पर होता था, जहां पूरा गांव एक साथ भाग लेता था। अब यह परिवारिक और व्यक्तिगत उत्सवों में बदल रहा है।
    - दीपावली, दशहरा और होली जैसे त्योहार अब अधिक निजी और उपभोक्तावादी बन गए हैं।
3. **शहरीकरण का प्रभाव**:
    - शहरों में पारंपरिक त्योहारों को आधुनिक मनोरंजन, जैसे क्लब पार्टियों और कंसर्ट्स के साथ जोड़ा गया है।
    - पंथी और कर्मा जैसे पारंपरिक नृत्य अब सांस्कृतिक कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं तक सीमित हो गए हैं।

6.2 वैश्वीकरण और सांस्कृतिक पहचान पर प्रभाव

वैश्वीकरण ने छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक परंपराओं और त्योहारों पर गहरा प्रभाव डाला है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, S.Iss 01, 2023

1. **सांस्कृतिक विलय**:
    - वैश्वीकरण के कारण अन्य राज्यों और देशों की परंपराएं और त्योहार छत्तीसगढ़ में लोकप्रिय हो रहे हैं। जैसे, क्रिसमस और वेलेंटाइन डे जैसे त्योहारों का प्रचलन बढ़ा है।
    - पारंपरिक त्योहारों में भी आधुनिक विदेशी तत्वों, जैसे सजावट और उपहार देने की प्रथाओं को शामिल किया जा रहा है।
2. **सांस्कृतिक पहचान पर चुनौती**:
    - पारंपरिक रीति-रिवाजों और त्योहारों में गिरावट आई है, खासकर युवा पीढ़ी में, जो आधुनिकता और वैश्विक प्रभावों की ओर अधिक आकर्षित हो रही है।
    - लोकगीत और लोकनृत्य जैसे पारंपरिक कला रूप वैश्विक पॉप कल्चर के दबाव में कम हो रहे हैं।
3. **सांस्कृतिक पुनरुत्थान**:
    - इसके विपरीत, वैश्वीकरण ने छत्तीसगढ़ की परंपराओं को वैश्विक मंच पर भी पहुंचाया है। पंथी नृत्य और छत्तीसगढ़ के मेलों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिल रही है।

6.3 पर्यावरणीय और आर्थिक दृष्टिकोण

पर्यावरण और आर्थिक कारकों ने त्योहारों और रीति-रिवाजों को आधुनिक समय में काफी प्रभावित किया है।

1. **पर्यावरणीय दृष्टिकोण**:
    - त्योहारों में पटाखों और प्लास्टिक सजावट के बढ़ते उपयोग ने पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव डाला है।
    - अब पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ने के कारण हरेली और छेरछेरा जैसे त्योहारों में वृक्षारोपण और जैविक पूजा सामग्री का उपयोग प्रोत्साहित किया जा रहा है।
    - पारंपरिक मूर्तियों के स्थान पर पर्यावरण-अनुकूल मूर्तियों का चलन बढ़ा है।
2. **आर्थिक दृष्टिकोण**:
    - आधुनिक त्योहार उपभोक्तावाद पर केंद्रित हो गए हैं, जहां उपहार और सजावट पर अधिक खर्च होता है।
    - पारंपरिक सामुदायिक आयोजन, जो पहले आत्मनिर्भर होते थे, अब बाजार-निर्भर हो गए हैं।
    - मेले और मड़ई, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था का केंद्र थे, अब पर्यटन और व्यापार का साधन बन गए हैं।
3. **कृषि आधारित त्योहारों का प्रभाव**:
    - हरेली और पोला जैसे त्योहार, जो खेती-किसानी से जुड़े थे, अब शहरीकरण के कारण अपनी प्रासंगिकता खो रहे हैं।
    - कृषि उत्पादों की बढ़ती लागत ने ग्रामीण त्योहारों में सरलता लाने के लिए मजबूर किया है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, S.Iss 01, 2023

7. सामाजिक समरसता में योगदान

छत्तीसगढ़ की रीति-रिवाजें और त्योहार सामाजिक समरसता और एकता को प्रोत्साहित करते हैं। ये न केवल पारंपरिक परंपराओं को जीवित रखते हैं, बल्कि समाज को सामूहिकता, सहयोग और सांस्कृतिक विविधता की भावना से जोड़ने का कार्य भी करते हैं। ये परंपराएं और उत्सव समाज के विभिन्न वर्गों और समुदायों को एकजुट कर सामाजिक समानता और सामंजस्य स्थापित करते हैं।

7.1 रीति-रिवाजों का सामाजिक एकता में योगदान (Role of Customs in Social Unity)

1. **सामाजिक बंधन को मजबूत करना**:
   - छत्तीसगढ़ में जन्म, विवाह, और मृत्यु से जुड़े रीति-रिवाज समाज के सभी वर्गों को एक साथ लाते हैं।
   - उदाहरण के लिए, विवाह के समय पूरा गांव या समुदाय आयोजन में भाग लेकर एकजुटता का परिचय देता है।
2. **सामाजिक समानता का प्रतीक**:
   - जातीय और धार्मिक विविधता के बावजूद, रीति-रिवाज सभी समुदायों के लिए समान महत्व रखते हैं।
   - जनजातीय समुदायों की परंपराएं, जैसे 'घोटुल', समाज में समानता और सामूहिकता की भावना को बढ़ावा देती हैं।
3. **सामाजिक विवादों का समाधान**:
   - पारंपरिक पंचायतें (ग्राम पंचायत या जनजातीय सभा) रीति-रिवाजों के अनुसार सामाजिक विवादों को हल करती हैं, जो सामाजिक एकता को बनाए रखने में सहायक होती हैं।

7.2 त्योहारों के माध्यम से सांस्कृतिक विविधता का संरक्षण

1. **संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण**:
   - त्योहार जैसे हरेली, पोला, तीजा, और मड़ई छत्तीसगढ़ की लोक परंपराओं को संरक्षित करते हैं।
   - इनमें गाए जाने वाले लोकगीत, किए जाने वाले लोकनृत्य और उपयोग किए जाने वाले पारंपरिक वाद्य यंत्र सांस्कृतिक धरोहर को जिंदा रखते हैं।
2. **सांस्कृतिक आदान-प्रदान**:
   - त्योहारों के माध्यम से विभिन्न जातीय और जनजातीय समुदाय अपनी परंपराओं और मान्यताओं को साझा करते हैं।
   - उदाहरण के लिए, मड़ई मेलों में जनजातीय और गैर-जनजातीय समुदायों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान देखने को मिलता है।
3. **नए परिवेश में परंपराओं का विकास**:
   - त्योहारों के माध्यम से आधुनिक और पारंपरिक मान्यताओं का समायोजन होता है, जिससे परंपराएं समय के साथ प्रासंगिक बनी रहती हैं।
4. **सांस्कृतिक विविधता के प्रति सम्मान**:
   - छत्तीसगढ़ में त्योहारों के माध्यम से एक समुदाय दूसरे समुदाय की परंपराओं का सम्मान करना सीखता है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, S.Iss 01, 2023

7.3 सामूहिकता और सहयोग की भावना

1. **सामूहिक आयोजन**:
   - छत्तीसगढ़ में अधिकांश त्योहार सामूहिक रूप से मनाए जाते हैं। मड़ई मेले, तीजा और छेरछेरा जैसे त्योहारों में पूरे गांव या क्षेत्र की भागीदारी होती है।
   - ये आयोजन न केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान का अवसर होते हैं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा देते हैं।
2. **आपसी सहयोग**:
   - सामूहिक त्योहारों में लोग एक-दूसरे की सहायता करते हैं, जैसे कृषि आधारित त्योहारों में खेतों की सामूहिक सफाई और पूजा।
   - सामूहिक भोज और मेलों में श्रम और संसाधनों का साझा उपयोग होता है।
3. **सामाजिक समरसता**:
   - त्योहारों में जाति, धर्म और वर्ग के भेदभाव को भुलाकर सभी लोग एकजुट होकर भाग लेते हैं।
   - उदाहरण के लिए, छेरछेरा त्योहार में सभी वर्गों के लोग अनाज और भोजन का आदान-प्रदान करते हैं, जो सामूहिकता का प्रतीक है।
4. **आपदा के समय सहयोग**:
   - प्राकृतिक आपदाओं या कठिन परिस्थितियों में सामूहिकता की भावना त्योहारों से प्रेरित होती है। समाज संकट के समय सामूहिक प्रयासों से एकजुटता दिखाता है।

8. निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ की रीति-रिवाजें और त्योहार समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना का अभिन्न हिस्सा हैं। इनकी विविधता, सामूहिकता, और परंपरागत महत्व राज्य को एक अनूठी पहचान प्रदान करते हैं। हालांकि, आधुनिकता, वैश्वीकरण और पर्यावरणीय चुनौतियों के बीच इन परंपराओं को प्रासंगिक और सजीव बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है। इसके बावजूद, इन रीति-रिवाजों और त्योहारों की स्थिरता, सामूहिक भावना, और सांस्कृतिक समृद्धि समाज को एकजुट रखने में सहायक है।

8.1 रीति-रिवाज और त्योहारों की स्थिरता और प्रासंगिकता

1. **स्थिरता**:
   छत्तीसगढ़ के रीति-रिवाज और त्योहार सदियों से समाज की धड़कन बने हुए हैं। ये केवल परंपराओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि जीवन के हर पहलू—धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक—को आकार देते हैं।
2. **प्रासंगिकता**:
   - त्योहार जैसे हरेली, पोला, तीजा और मड़ई ग्रामीण समाज की सामूहिक भावना और कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को सजीव बनाए रखते हैं।
   - आधुनिक परिवर्तनों के बावजूद, ये परंपराएं आज भी लोगों को सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से जोड़ने में प्रासंगिक हैं।
   - पर्यावरण संरक्षण, सामूहिकता और सामाजिक समरसता के मूल्यों को सुदृढ़ करने में इन त्योहारों का विशेष महत्व है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, S.Iss 01, 2023

8.2 छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने की आवश्यकता

1. **परंपराओं का संरक्षण**: छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर, जिसमें लोकनृत्य, लोकगीत, वाद्य यंत्र, और रीति-रिवाज शामिल हैं, धीरे-धीरे वैश्वीकरण और आधुनिकता के प्रभाव में कमजोर हो रही हैं। इसे संरक्षित करने के लिए विशेष प्रयासों की आवश्यकता है।
2. **युवा पीढ़ी की भागीदारी**:
    - पारंपरिक रीति-रिवाजों और त्योहारों में युवाओं की भागीदारी कम हो रही है। इसे प्रोत्साहित करने के लिए स्कूल और कॉलेज स्तर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों और कार्यशालाओं का आयोजन आवश्यक है।
    - डिजिटल मीडिया का उपयोग करके लोककला, नृत्य और त्योहारों का प्रचार-प्रसार किया जा सकता है।
3. **सांस्कृतिक विरासत का प्रलेखन**:
    - छत्तीसगढ़ के रीति-रिवाज और त्योहारों को सहेजने के लिए उनका वैज्ञानिक और ऐतिहासिक प्रलेखन करना आवश्यक है।
    - स्थानीय इतिहासकार, कलाकार और शोधकर्ता इस धरोहर को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
4. **पर्यटन और सांस्कृतिक संवर्धन**:
    - छत्तीसगढ़ के त्योहारों और सांस्कृतिक परंपराओं को पर्यटन के माध्यम से वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया जा सकता है।
    - इससे न केवल राज्य की सांस्कृतिक पहचान मजबूत होगी, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा मिलेगा।

8.3 भविष्य के लिए सुझाव

1. **परंपराओं और आधुनिकता का संतुलन**:
    - पारंपरिक रीति-रिवाजों और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।
    - त्योहारों को आधुनिक जीवनशैली के साथ समायोजित करने के प्रयास किए जाने चाहिए, ताकि वे प्रासंगिक बने रहें।
2. **पर्यावरण-अनुकूल त्योहार**:
    - त्योहारों के दौरान पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने के लिए जैविक और पर्यावरण-अनुकूल सामग्री का उपयोग बढ़ावा देना चाहिए।
    - हरेली और पोला जैसे त्योहारों में वृक्षारोपण और पर्यावरण संरक्षण को और अधिक प्रोत्साहित किया जा सकता है।
3. **सामुदायिक भागीदारी**:
    - त्योहारों और रीति-रिवाजों को सामूहिक रूप से मनाने की परंपरा को पुनर्जीवित करना चाहिए।
    - सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों को त्योहारों के आयोजन और प्रचार में सहयोग करना चाहिए।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, S.Iss 01, 2023

4. **शिक्षा और जागरूकता**:
    - सांस्कृतिक परंपराओं को शिक्षण पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाना चाहिए।
    - बच्चों और युवाओं को छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर के महत्व को समझाने के लिए जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है।
5. **सांस्कृतिक मेलों का आयोजन**:
    - राज्य स्तर पर अधिक से अधिक सांस्कृतिक मेलों और त्योहारों का आयोजन होना चाहिए, जहां विभिन्न समुदाय अपनी परंपराओं को साझा कर सकें।

संदर्भ

1. श्रीवास्तव, ए. (2019). **"छत्तीसगढ़ की संस्कृति और परंपराएं"**. दिल्ली: भारतीय लोक कला प्रकाशन।
2. त्रिपाठी, आर. (2021). **"लोक नृत्य और संगीत: छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान"**. रायपुर: संस्कृति विभाग।
3. मिश्रा, पी. (2018). **"दक्षिण कोसल का इतिहास और परंपराएं"**. वाराणसी: भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद।
4. चतुर्वेदी, एस. (2020). **"छत्तीसगढ़ के कृषि त्योहार: परंपराएं और विकास"**. भोपाल: कृषि अनुसंधान केंद्र।